बजट (BUDGET) ①

बजट किसे कहते है। अच्छे बजट के मुख्य सिद्धान्त क्या है ?
What is Budget. What are the main principles of sound budget making.

बजट शब्द का उद्गम फ्रांसीसी भाषा के शब्द Bougettee से हुआ है जिसका अर्थ चमड़े का एक छोटा सा थैला या डिब्बा है। जिसमें वित्त मंत्री अपने कागजात रखता है। इस शब्द का प्रयोग इंग्लैण्ड में सन 1733 ई० से होने लगा जबकि आय और व्यय की योजना को प्रस्तुत करने की व्यवस्था हुई। जिसे बजट व्याख्यान के नाम से पुकारा जाता था। सन 1803 ई० की फ्रांस की वित्तीय शब्दावली में भी इसका प्रयोग होने लगा जबकि इसको आय और व्यय के विवरण के रूप में प्रयोग में लाने लगे। परन्तु आजकल बजट का अर्थ केवल थैले या विवरण से नहीं लिया जाता, वरन उस थैले के अन्दर की वस्तुओं और विवरण की मुख्य मदों से लगाया जाता है।

बजट की परिभाषा के संबंध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। आर्थिक शब्दों की तरह बजट की अनेक परिभाषाएँ देखने को मिलती है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ इस प्रकार है।

G. Jaze जी.जेज के अनुसार " आधुनिक समाज में बजट एक भविष्यवाणी है और समस्त राजकीय कार्यों तथा व्ययों का एक अनुमान है। यह कुछ विशेष प्रकार के खर्च और कार्यों के लिए, धन एकत्र करने के लिए और उनको व्यय करने का आदेश है।"

रीन स्टोर्म (Rene Stourm) :— "सरकार का बजट एक ऐसा प्रपत्र है जिसमें सरकारी आय और व्यय की एक प्रारंभिक अनुमोदित योजना रहती है।"

लेनाय ब्यूलियो (Leonoy Beaulieu) :— के अनुसार " A Budget is a statement of the estimated receipt and expenses during a fixed period " बजट एक निश्चित अवधि के अन्तर्गत होने वाली अनुमानित प्राप्तियों तथा खर्चों का एक विवरण है।

भारतीय संविधान के अनुसार बजट का अर्थ एक ऐसा सालाना वित्तीय विवरण है जिसमें आगामी वर्ष के सभी प्राक्कलित राजस्व और खर्च के ब्यौरे के साथ पिछले वर्ष की वित्तीय स्थिति की पुनरीक्षण नये तरीके से करके प्रस्ताव तथा पूँजीगत खर्च की व्यवस्था से सम्बन्धित प्रस्ताव भी मौजूद रहते है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बजट वह विवरण [illegible] है जिसमें वित्त मंत्री द्वारा संसद के सामने पिछले वर्ष [illegible] में सार्वजनिक कोष की स्थिति तथा आगामी वर्ष

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

के कार्यक्रम और आय बढ़ाने-घटाने के अपने नये प्रस्ताव प्रस्तुत करता है।

बजट से संबंधित ऊपर लिखित परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर उनकी निम्न विशेषताएँ प्रकट होती है :— (2)

(i) बजट सरकारी रीति नीतियों को प्रतिबिम्बित करने का एक प्रशासनिक प्रपत्र होता है।

(ii) यह पिछले वर्ष में कार्यपालिका द्वारा संपादित प्रशासनिक तथा वित्तीय कार्यों का एक संतुलित लेखा होता है।

(iii) यह सरकारी क्रिया कलापों के संचालन के लिए आवश्यक धनराशि जुटाने तथा उसे खर्च करने का एक व्यवस्थित मसौदा होता है।

(iv) व्यवस्थापिका के समक्ष स्वीकृति के लिए पेश किए जाने के कारण बजट नियमित रूप से कार्यपालिका को व्यवस्थापिका के प्रति अपने उत्तरदायित्व का बोध कराते रहने का एक प्रभावी माध्यम है।

(v) व्यवस्थापिका की स्वीकृति मिलने के पश्चात ही बजट को उसकी सततपुष्टि का प्रमाण माना जा सकता है।

बजट निर्माण के मुख्य सिद्धान्त (Important principles of the Budget) :— बजट चूंकि नीति और कार्य प्रबन्ध का एक प्रभावकारी साधन है, इस लिए उसे बजट निर्माण के सिद्धान्तों के अनुरूप होना चाहिए। बजट निर्माण के कोई नपे तुले सिद्धान्त नहीं है किन्तु प्रमुख देशों के लम्बे अनुभव के आधार पर निम्न लिखित सिद्धान्त बनाये गये है :—

साधारणतः बजट निर्माण के सिद्धान्तों में निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त है :—

(i) बजट संतुलित होना चाहिए (Budget should be a balanced one) :— बजट को आवश्यक रूप से संतुलित होना चाहिए। प्रत्येक व्यय राशि के लिए आवश्यक धन की व्यवस्था होनी चाहिए। अनुमानित आय से व्यय कभी भी अधिक नहीं होना चाहिए। जब किसी बजट के राजस्व और व्यय की राशियाँ बराबर या लगभग बराबर होती है तो उसे संतुलित बजट कहा जाता है। यदि बजट आकलित राजस्व से कम होता है तो उसे मुनाफे का बजट कहते है।

लोक वित्त निजी वित्त से राजस्व के लचीलेपन के आधार पर भिन्न होता है, परन्तु उसकी भी एक सीमा है। वैसा राज्य जो अनुमानित आय से व्यय ही अधिक करता है तो अन्ततोगत्वा वह राज्य दिवालियापन को ही प्राप्त करेगा।

श्री पी. के. वत्तल के अनुसार " बजट का संतुलित होना वित्तिय स्थिति की पहली शर्त है और वित्तिय प्रशासन में इसका प्रायः वही स्थान है जो कार्यपालिका प्रशासन में कानून और व्यवस्था बनाये रखने का है। असंतुलित बजट में कभी न कभी निवेशकर्ता का विश्वास कमजोर हो जायेगा और मुद्रा स्फीति आने का भय रहेगा जिसे नियंत्रित करने से देश में अव्यवस्था फैल जायेगी।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(ii) अनुमान नकद आधार पर बनाए जाए (Estimates should be one cash basis) :— एक ठोस बजट प्रणाली की दूसरी आधारभूत विशेषता यह है कि उसका प्राक्कलन नकद आधार पर होना चाहिए। बजट का नकद आधार यह है कि आय और व्यय की राशि वैसी हो जो वित्तीय वर्ष के अन्दर प्राप्त हो और विभिन्न मदों में जिसका खर्च हो। यहाँ कुछ ऐसे कर निश्चित किए जाने पर भी जिसकी वसूली आगामी वर्षों में किए जाने की बात होती है, नकद बजट के अन्तर्गत नहीं आते। नकद का वर्ष में व्यय करने के लिए उपलब्ध धनराशि को ही कर सकते है। नकद बजट निर्माण की प्रणाली ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं भारत में प्रचलित है।

नकद बजट से सुविधा यह है कि वर्ष पूरा होते ही लेन-देन ठीक-ठीक हिसाब बन जाता है। श्री पी.के. वत्तल के अनुसार "नकदी के आधार पर अनुमान लगाने का एक लाभ यह है कि सार्वजनिक लेखाओं की माँग एवं दायित्व के आधार पर तैयार किए गये लेखाओं की अपेक्षा जल्दी बन्द किया जा सकता है।" परन्तु इसका दोष यह है कि इससे वास्तविक अवस्था प्रकट नहीं होती।

(iii) पूँजी और वार्षिक आय का ब्योरा अलग-अलग होना चाहिए (Revenue and capital parts should be kept sebrate) :— बजट निर्माण का तीसरा प्रमुख सिद्धांत यह है कि उसमें पूँजीगत धन, वार्षिक आय तथा खर्च के ब्योरे को अलग-अलग दिखलाना चाहिए। बजट के दो अलग-अलग भागों में वार्षिक आय व्यय तथा विषयक आय-व्यय का उल्लेख होना चाहिए। यदि प्रति वार्षिक आय तथा आकस्मिक आय व्यय को अलग-अलग नहीं रखा जाता है तो इसमें सम्पूर्ण वित्तीय धन अस्पष्ट तथा उपोत्पादक हो जायेगा। वैसी दशा में चालू खर्च पूँजीगत धन से पूरा किया जायेगा। स्पष्ट है कि दोनों का हिसाब अलग-अलग होना चाहिए इससे प्रति वार्षिक तथा पूँजी संबंधी आय-व्यय के विषयों का पता लगता है।

(iv) बजट संकलन की शुद्ध आय के आधार पर बनाया जाए - (Budgeting should be done one the basis is of gross and not net income) :— एक बजट निर्माण का ठोस प्रणाली का चौथा आधारभूत सिद्धांत यह है कि उसे संकलन की शुद्ध आय के आधार पर बनाए जाए। जिसमें विषयों का उल्लेख सर्वांगीण होना चाहिए। मात्र निष्कर्षों का उल्लेख पर्याप्त नहीं है। सर्वांगीण बजट में आय व्यय का पूरा विवरण होना चाहिए। केवल यह दिखलाना कि अमुक आय होगी और अमुक का व्यय होगा। कभी भी युक्तिसंगत नहीं कहा जा सकता। यदि आय की बात होती है तो उसमें यह दिखलाया जाना चाहिए कि आय कैसे और कहाँ से होगी। इसी [illegible] की बात होती है तो उसके साथ यह चर्चा होनी चाहिए कि [illegible] किन विषयों पर होगा। इस नियम की अवहेलना

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

से आर्थिक विधि संक्षिप्त होती है, आर्थिक नियंत्रण में ढीलापन आता है और लेखा विवरण अधूरा रहता है।

(v) अनुमान यथा संभव ठीक हो (Estimating should be as far as possible exact) :- अनुमान यथा संभव ठीक हो। न अल्पानुमान होना चाहिए और न ही अवानुमान। खर्च के अल्पानुमान का दुष्परिणाम यह होता है कि व्यय को पूरा करने के लिए जनता पर भारी कर लगाया जाता है। अवानुमान होने से क्रियान्वयन के समय कठिनाई होती है और पूरा बजट बेकार हो जाता है। अतः अनुमान यथा संभव वास्तविकता के अधिक से अधिक निकट होना चाहिए। इसके लिए पिछले तीन वर्ष के आय-व्यय की राशियों को लेकर उनके आधार पर सही अनुमान किया जा सकता है।

(vi) आय-व्यय के प्रस्ताव लेखा के ढंग के होने चाहिए (The form of estimates should correspond to the format accounts) :- एक ठोस एवं बजटीय व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि इसका प्रस्ताव लेखा के ढंग के होने चाहिए। इसमें तीन लाभ है - (i) बजट सुगमता से तैयार होता है (ii) नियंत्रण सरल होता है तथा (iii) उसके परीक्षण और लेखन में आसानी भी होता है। भारत में बजट के स्वरूप का निर्धारण वित्त मंत्री के द्वारा अनुमान समिति से आवश्यक मशविरा करने और परामर्श लेने के बाद ही होता है।

(vii) राशि संक्रमण का नियम (The rule of Lapse) :- बजट निर्माण का सातवाँ और अन्तिम सिद्धान्त राशि संक्रमण का नियम है। राशि संक्रमण नियम का अर्थ है कि जो प्रस्तावित तथा अनुज्ञात राशि वित्तिय वर्ष की अवधि के भीतर खर्च नहीं होती है वह संक्रमित हो जाती है, उसे आगामी वर्ष के लिए नहीं रखा जा सकता। वह राजकोष का धन हो जाता है। विभागों को सुरक्षित राशि रखने का अधिकार नहीं है। इसके लिए उन्हें वैधानिक अनुज्ञा प्राप्त करनी पड़ती है।

प्रभावकारी वित्तिय नियंत्रण की दृष्टि से राशि संक्रमण का नियम आवश्यक है। इसके अभाव में सरकारी विभाग विधानमंडल के नियंत्रण से स्वतंत्र हो जा सकते हैं। परन्तु आर्थिक विनियोग की दृष्टि से यह असुविधाजनक है। चूँकि प्रदत्त राशि संक्रमित न हो जाए इसलिए वित्तिय वर्ष के अन्तिम दिनों में विभागीय अधिकारी इसका आँख मूँद कर उपयोग करते हैं। जिससे सरकारी धन के दुरुपयोग होने की संभावना बनी रहती है।

बजट निर्माण में वास्तविकता से कुछ ऊपर उठकर व्यवहार में अनुपालन किया जाय तो आवश्यकतानुसार लाभ का बजट बन सकता है। विश्व के अधिकांश देशों की बजटीय व्यवस्थाओं में सिद्धान्तों से ऊपर उठकर व्यवहार में अनुपालन से देश दिन दूनी और रात चौगुनी के रास्ते पर बढ़ता नजर आ रहा है जिसकी यहाँ भी आवश्यकता है।

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान
डी० के० कालेज, डुमराँव
दिनांक - 17/07/2020